पत्ती मोडन् रोग

इसका लक्षण नई पत्तियों पर हरिमाहीनता के रूप में पत्तीयों की मध्य शिराओं पर दिखाई देते हैं। इस रोग में पत्तियां मध्य शिराओं के ऊपर की ओर मुड़ जाती है तथा नीचे की पत्तियां अंदर की ओर मुड़ जाती है तथा पत्तियों की वृद्धि रूक जाती है और अन्ततः पौधे मर जाते हैं।

नियंत्रण

यह विषाणु जनित रोग है। जिसका संचरण थ्रीप्स द्वारा होता हैं। थ्रीप्स के लिए ऐसीफेट 75 प्रतिशत एस.पी. या 2 मिली डाईमैथोएट प्रति लीटर के हिसाब से छिडक़ाव करना चाहिए और फसल की बुवाई समय पर करनी चाहिए।

पत्ती धब्बा रोग

यह रोग फफूंद द्वारा फैलता है। इसके लक्षण पत्तियों पर छोटे–छोटे धब्बे के रूप में दिखाई देते हैं।

नियंत्रण

कार्बेन्डाजिम 1 किग्रा 1000 लीटर पानी में घोल बना कर प्रति हेक्टर की दर से छिडकाव करना चाहिए।

उड़द की फसल में लगने वाले प्रमुख कीट एवं नियंत्रण

उड़द की फसल में मुख्यतया थ्रिप्स, हरे फुदके, कमला कीट एवं फली छेदक कीट आदि लगते है, इसके नियंत्रण के लिए क्युनाल्फोस 25 ई. सी. 1.25 लीटर मात्रा को 700–800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टर की दर से छिडकाव करना चाहिए।

उड़द की फसल की कटाई और मड़ाई

उड़द लगभग 70–80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है इसलिए ग्रीष्म ऋतु की कटाई मई–जुन में तथा वर्षा ऋतु की कटाई सितंबर/ अक्टूबर में जब फलियों का रंग काला पड़ने लगे उस अवस्था में हसियाँ से कटाई करे तथा उसको सुखाते है बाद में हाथ से डण्डो द्वारा या थ्रेसर से फलियों से दानों निकाल लिया जाता है।

उड़द की उपज एवं भंडारण

जायद में उपज 10–12 कुंतल प्रति हेक्टर प्राप्त होती है तथा खरीफ में 12–15 कुंतल प्रति हेक्टर प्राप्त होती है। भंडारण के लिए बीज को भंडारण करने से पहले अच्छी तरह से सुखा लेना चाहिए, बीज में 10 प्रतिशत से नमी की अवस्था में भंडारित कर सकते हैं। सुखी नीम की पत्ती को बीज में मिलाकर भंडारण करने पर कीड़ो से सुरक्षा की जा सकती है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

कृषि विज्ञान केन्द्र, भगवानपुर हाट सिवान

(डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रिय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर)

मार्गदर्शक– डॉ0 मधुसुदन कुण्डु, निदेशक प्रसार शिक्षा

Printed By - ***New Print Zone***, Samastipur # 9771222492

प्र.शि.नि./प्रकाशन/310/2022–23

उड़द की उन्नत खेती

लेखकगण

शिवम् चौबे, ई. कृष्णा बहादुर क्षेत्री, डॉ अनुराधा रंजन कुमारी, डॉ. हर्षा बी. आर., डॉ. नंदिशा सी.बी., प्रशांत कुमार एवं डॉ. अनुपमा कुमारी

कृषि विज्ञान केन्द्र

भगवानपुर हाट, सिवान

डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर – 848125 (बिहार)

उड़द एक दलहनी फसल है, जिसकी खेती उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, हरियाणा के सिंचित क्षेत्रों में की जाती है। यह एक अल्प अवधि की फसल है जो लगभग 60–65 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। उड़द को वार्षिक आय बढ़ाने वाला फसल भी कहा जाता है। इसके खेती के लिए जायद का मौसम सबसे उपयुक्त है। इसके दाने में लगभग 60 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, 24 प्रतिशत प्रोटीन तथा 1.3 प्रतिशत वसा पायी जाती है। उड़द का उपयोग प्रमुख रूप से दाल के रूप मे किया जाता है। उड़द से स्वादिष्ट व्यंजन जैसे कचौड़ी, पापड़, बड़ी, बड़े, हलवा, इमरती, पूरी, इडली, डोसा आदि भी तैयार किये जाते है। इसकी दाल की भूसी पशु आहार के रूप मे उपयोग की जाती है। उड़द के हरे एवं सूखे पौधो को पशु बहुत चाव से खाते है। उड़द दलहनीय फसल होने के कारण वायुमण्डलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करके भूमि की उर्वरा शक्ति मे बढ़ोत्तरी करती है। इसके अतिरिक्त उड़द की फली तुड़ाई के उपरान्त फसलों की पत्तियाँ एवं जडों के अवशेष मृदा में रह जाने के कारण भूमि मे कार्बनिक पदार्थ की मात्रा बढ़ जाती है। हरी खाद के रूप मे भी उड़द की फसल का उपयोग किया जा सकता है।

उड़द की खेती के लिए जलवायु एवं तापक्रम

उड़द की खेती के लिए उष्ण जलवायु सबसे उपयुक्त मानी गई है, यह फसल उच्च तापक्रम को सहन करने में पूरी तरह से सक्षम है. यही कारण है कि इसकी खेती सबसे अधिक उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान और हरियाणा जैसे राज्यों में होती है। सामान्यतया 25 से 35 डिग्री सेल्सियस तक का तापमान इसकी खेती के लिए उपयुक्त माना गया है. हालांकि, उड़द बड़ी आसानी से 43 डिग्री सेल्सियस तक का तापमान भी सहन कर सकती है।

उड़द की खेती के लिए मृदा का चयन एवं तैयारी

उचित जल निकास वाली हल्की रेतीली दोमट या मध्यम प्रकार की जिसका पीएच मान 7–8 के मध्य हो वह भूमि उड़द के खेती के लिये सर्वोत्तम मानी जाती है। उड़द के खेत की तैयारी भारी मिट्टी होने पर 2 से 3 बार जुताई करना जरूरी है, जुताई के बाद पाटा चलाकर खेत को समतल बना लेना अच्छा होता है, इससे मिट्टी में नमी बनी रहती है।

उड़द की उन्नत किस्में

उड़द की मुख्यतया दो प्रकार की प्रजातियाँ पायी जाती है, पहला खरीफ में उत्पादन हेतु जैसे कि – शेखर–3, आजाद उड़द–3, पन्त उड़द–31, डव्लू. वी.–108, पन्त यू.–30, आई. पी. यू. –94 एवं पी.डी.यू.–1 मुख्य रूप से है, वही जायद हेतु पन्त यू.–19, पन्त यू.–35, टाईप–9, नरेन्द्र उड़द–1, आजाद उड़द–1, उत्तरा, आजाद उड़द–2 एवं शेखर–2 प्रजातियाँ है। कुछ प्रजातियाँ खरीफ एवं जायद दोनों ऋतुओ में उत्पादित की जाती है, जैसे– टाईप–9, नरेन्द्र उड़द–1, आजाद उड़द–2, शेखर उड़द–2।

बीजोपचार

बुवाई से पूर्व बीज का अंकुरण क्षमता का जांच अवश्य कर लेनी चाहिये, बीज यदि उपचारित नहीं है तो बुवाई के पूर्व बीज को फफूंदी नाशक दवा थीरम 3 ग्राम प्रति किलोग्राम से अवश्य उपचारित कर लें।

बीज दर एवं बुवाई

खरीफ ऋतु में बीज दर 12 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर एवं ग्रीष्म ऋतु में 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बीजों को बोया जा सकता है। उड़द की बुवाई खरीफ व जायद दोनों फसलो में अलग–अलग समय पर की जाती है, खरीफ में जुलाई के प्रथम सप्ताह में बुवाई की जाती है एवं जायद में 15 फरवरी से 15 मार्च तक बुवाई की जाती है।

उड़द की फसल में उर्वरकों की मात्रा एवं प्रयोग विधि

उड़द एक दलहनी फसल होने के कारण अधिक नत्रजन की आवश्यकता नहीं होती है क्योकि उड़द की जड़ में उपस्थित राईजोबियम जीवाणु वायुमण्डल की स्वतन्त्र नत्रजन को ग्रहण करते है और पौधो को प्रदान करते है। पौधे की प्रारम्भिक अवस्था में जब तक जड़ो में नत्रजन इकट्ठा करने वाले जीवाणु क्रियाशील हो तब तक के लिए 15–20 किग्रा नत्रजन 40–50 किग्रा फास्फोरस तथा 40 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के समय मृदा में मिला देते है।

उड़द की फसल में सिंचाई प्रबंधन

खरीफ ऋतु की फसल में वर्षा कम होने पर फलियों के बनते समय एक सिंचाई करने की आवश्यकता पडती है तथा जायद की फसल में पहली सिंचाई बुवाई के 30–35 दिन बाद करनी चाहिए, इसके बाद मृदा नमी के आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए।

उड़द की फसल में खरपतवार प्रबंधन

वर्षा ऋतु की उड़द की फसल में खरपतवार का अत्यधिक प्रकोप रहता है, जिससे लगभग 40–50 प्रतिशत उपज में हानि हो सकती है। रसायनिक विधि द्वारा खरपतवार नियन्त्रण के लिए फसल की बुवाई के बाद एवं बीजों के अंकुरण के पूर्व पेन्डिमिथालीन 1.25 किग्रा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव कर खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है। अगर खरपतवार फसल में उग जाते है तो फसल बुवाई के 15–20 दिनों की अवस्था पर पहली निराई – गुड़ाई खुरपी की मदद से कर देनी चाहिए तथा पुनः खरपतवार उग जाने पर 15 दिनों के बाद निराई करनी चाहिए।

उड़द की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग एवं नियंत्रण

उड़द की फसल में प्रायः पीले चित्रवर्ण या मोजैक रोग लगता है, इसमे रोग के विषाणु सफ़ेद मक्खी के द्वारा फैलता है, इसकी रोकथाम के लिए, समय से बुवाई करना अति आवश्यक है, दूसरा मोजैक अवरोधी प्रजातियों की बुवाई करनी चाहिए। इसके साथ ही साथ मोजैक से ग्रसित पौधे फसल में दिखते ही सावधानी पूर्वक उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए और रसायनों का प्रयोग भी करते है, जैसे कि डाईमिथोएट 30 ई. सी. 1 लीटर प्रति हेक्टर या मिथाईल–ओ–डिमेटान 25 ई. सी. 1 लीटर प्रति हेक्टर की दर से छिडकाव करना चाहिए।

पीला मोजेक विषाणु रोग

यह उड़द का सामान्य रोग है और वायरस द्वारा फैलता है इसका वाहक सफेद मक्खी है । इसका प्रभाव 4–5 सप्ताह बाद ही दिखाई देने लगता है। इस रोग में सबसे पहले पत्तियों पर पीले रंग के धब्बे गोलाकार रूप में दिखाई देने लगते हैं। कुछ ही दिनों में पूरी पत्तियां पीली हो जाती है। अंत में ये पत्तियां सफेद सी होकर सूख जाती है।

नियंत्रण

सफेद मक्खी की रोकथाम से रोग पर नियंत्रण संभव है। उड़द का पीला मोजैक रोग प्रतिरोधी किस्म पंत यू–19, पंत यू–30, यू.जी.218, टी.पी.यू.–4, पंत उड़द–30, बरखा, के.यू.–96–3 की बुवाई करनी चाहिए।